लोक संस्कृति

बैलों की दीवाली

रामफूल गुर्जर,
सहा. निदेशक(जन संपर्क)
जयपुर, राज.
(मो.)8875002802

प्रदेश में ग्रामीण अंचलों में दीपावली का त्यौहार मनाने की अपनी ही परम्परा हैं। दीपोत्सव के दौरान ग्रामीण अंचल में बैंलो की पूजा विशेष उत्साह एवं परंपरागत रूप से की जाती हैं। बैलों के मालिकों द्वारा बैलों को दीवाली पर पूजने के लिए प्रारंभिक तैयारियाँ बहुत पहले से ही शुरू की जाती हैं। दीपावली पर पशुओं के गले में बांधने के लिए ज्येष्ठ माह में ही आस-पास में लगने वाले मेले से घंटियां और घुंघरू क्रय कर रख ली जाती है।

इन मेलो में से ही सामूहिक बैल पूजा के लिए पूजन सामग्री खरीदना भी कृषक नहीं भूलते। पटवा कारीगर बाजार में बैलों की दीपावली की श्रृंगार सामग्री की इन्द्रधनुषी दुकान सजा लेते हैं। इसे यह काफी समय पहले बनाना शुरू कर देते हैं। दीपावली से पहले से ही इनकी खरीद-बिक्री शुरू हो जाती हैं। विभिन्न भव्य मांडनों से गांव का हर घर-आंगन सजाया जाता हैं। चौका-चूल्हा एवं बैल बांधने के स्थान तक मांडने बनाए जाते हैं।

लक्ष्मी पूजन वाले दिन सुबह तड़के गांव के तालाब या जोहढ़ पर ले जाकर बैलों को रगड़-रगड़ कर नहलाया जाता हैं। तत्पश्चात् महिलाएं बैलों की देह पर आकर्षक मेंहदी सजाती हैं। बैलों को सतरंगी कपड़े, गोटों की झालर लगी आकर्षक झूलिया ओढ़ाई जाती हैं, बैलों के सींगो को राष्ट्रीय तिरंगे के रंगो से रंगा जाता है और दूल्हे के समान श्रृंगार करके सजाया जाता हैं। गोवर्धन वाले दिन गोधूली बेला के बाद शाम ढलते ही सजे धजे बैलों का परंपरागत पूजन किया जाता हैं।

इससे पूर्व गांव के किसी बडे स्थान पर पूजा के लिए बनाये गये गोवर्धन जी पर बलाई आ कर गौ-माता के गोबर से लीप-पोत खुर और मोरड़ी बनाता है, जिसे गोली लगाना कहते हैं। घर पर पहले विधिपूर्वक पूजा की जाती है। भरपेट देशी घी की पूड़ियां खिलाई जाती है और जो गिर जाती है उन्हें मकर सक्रान्ति पर खेत में डाल दिया जाता हैं। विश्वास है कि इससे फसल अच्छी होगी। गोवर्धन जी के चारों ओर बैल मालिक नहा-धोकर मूछों पर ताव देकर नये धोती, कमीज, अंगोछा एवं साफा पहनकर अपनी बैलों की जोड़ियों को मजबूती से पकड़कर गोवर्धन जी को नमन करने की मुद्रा में खड़े रहते हैं। बैलो की आरती उतार कर मालिक सिर नवाते हैं। इसके बाद गांव के

बुजुर्ग लोग गोवर्धन जी के चारों ओर पूजी जा रही बैल जोड़ी के आगे धोक देते है, फिर नौबत, बाजा, ढ़ोल–नगाड़ा, शंख और परम्परागत लोक वाद्ययंत्र के बजते ही ‘‘कौन पहले गोवर्धन जी मंगालेगा’ की होड़ाहोड़ मचती हैं। प्रतिस्पर्धा का यह दृश्य बड़ा ही रोमांचक एवं साहसिक होता हैं।

बैल पूजा के दौरान हीड गायक बैलों की प्रशंसा में हीड गाते हैं। एवं महिलाएं अपने परम्परागत नए परिधान में सज–धजकर हाथों में पूजा के लिए कासी की थाली व मंगल कलश लेकर सामूहिक मंगल लोकगीत गाती हैं। इस दौरान बच्चे, युवा और बुजुर्ग भी पटाखों की लडीयां व विभिन्न तरह के पटाखे इस स्थान पर छोडकर मज़े लेने के लिए बैलो की जोडियों को चमकाने का प्रयास करतें हैं। पूजन के बाद बैलों का जुलूस के रूप में पानी पिलाने के लिए तालाब पर ले जाना भारी उमंग भरा होता है क्योंकि गांव के सभी बैलो की जोडीयां घुंघरू बजाते हुए एक साथ दौड़ती हुई जाती है तो कौतुहल होना स्वाभाविक हैं। शुभ प्रतीक के रूप में गांव के चौराहे पर एक रस्सी बांधी जाती है जो मंगाल कही जाती हैं।

मान्यता है कि जो बैल इसके नीचे से गुजरेगा, वह कभी बीमार नहीं होगा। बैलों के जाने के बाद गांव में उसी पूजा स्थान पर घंटो सामूहिक आतिशबाजी का प्रदर्शन होता है और सामूहिक राम–रमी की जाती है, जहां बच्चे व युवा अपने से बड़ो के चरण स्पर्श कर धोक देते है। इस दौरान यह पूजा स्थल आगामी वर्ष की मंगलकामना के आर्शीवाद समारोह में तब्दील हो जाता है, जिसका मार्मिक दृश्य देखतें ही बनता हैं। जिन घरों से बुजुर्ग शारीरिक कारणों से यहां शिरकत नहीं करते हैं, उनकी सार–संभाल व दीपावली की राम–राम करने के लिए घर–घर भी जाते हैं। इस आशा में कि पता नहीं अगली दीपावली तक कोई रहे या नहीं रहे।

प्राचीन समय से चली आ रही पशु पूजन की कड़ी में दीपावली पर बैल पूजा और लक्ष्मी के स्वागत का विस्तृत एवं रोचक रूप जैसा ग्रामीण परिवेश में देखने को मिलता हैं, वैसा अन्यत्र शायद ही कहीं हो। इस दौरान खील, पताशे, गन्ना एवं अन्य उपज की पूजा भी की जाती हैं। इस प्रकार दीपावली पर सामूहिक बैल पूजन हमें हमारी पुरातन लोक संस्कृति की याद दिलाता हैं। समय के साथ प्राचीन लोक संस्कृति की दशा और दिशा बदल रही हैं। ग्रामीण क्षेत्र भी इससे अछूते नहीं रहे। अब गांव में भी बैल पूजन की परंपरा लगभग खतम होने के कगार पर हैं, क्योंकि बैलों की जगह ट्रेक्टरों ने ले ली हैं।

****